AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

संपोषणीय विकास एवं प्राकृतिक आपदायें: एक अध्ययन

ORIGINAL ARTICLE

Author

डॉ. अरविन्द सिंह,

एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष

समाजशास्त्र विभाग

तिलक महाविद्यालय,

औरैया, उत्तरप्रदेश, भारत

शोध सार

सर्वविदित है कि विकास एक सतत् एवं परिवर्तनशील प्रक्रिया है। वर्तमान में प्राकृतिक असन्तुलन एवं पर्यावरणीय खतरों को देखते हुए संपोषणीय (सतत्) विकास की परम आवश्यकता है। संपोषणीय विकास से अभिप्राय उस विकास से है जो वर्तमान की आवश्यकताओं को तो पूरा करता ही है भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं के प्रति भी पूर्ण जबाबदेही रखता है। विश्व में तीव्र गति से हो रहे विकास एवं प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध उपभोग इस बात की गवाही देता है कि विश्व में संपोषणीय विकास की घोर अनदेखी की जा रही है जिसके परिणामस्वरुप विश्व में कई तरह की प्राकृतिक आपदायें एवं महामारियाँ आ रही है। कोविड–19 एवं इसके नये–नये वेरिऐंट का आना इसका ज्वलन्त उदाहरण है जिससे पूरी दुनिंया जूझ रही है। इसलिए इस मानवता को बचाने के लिए विकास के ऐसे मानक तैयार करने होंगे जो संपोषणीय विकास का पर्याप्त बन सकें। इस हेतु आज एक विशेष क्रियानीति की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द

संपोषणीय विकास, पर्यावरणीय संतुलन, प्राकृतिक आपदायें एवं महामारियाँ, वैश्विक तपन, प्रदूषण नियंत्रण.

प्रस्तावना

सर्वप्रथम 17–18वीं शताब्दी में यूरोप विशेषकर इंग्लैण्ड में जब बडी मात्रा में इमारती लकड़ी को काटा जा रहा था तब यह चिन्ता व्यक्त की गई कि भावी पीढ़ी के लिए इमारती लकड़ी बचेगी ही नहीं इसलिये इमारती लकड़ी के कटान पर अंकुश लगाया जाये और यही से Sustainable forest management की बात शुरु हुई।

भारत में भी प्राकृतिक संसाधनो का तेजी से हो रहे दोहन के कारण यह बात सामने आयी कि विकास के नाम पर इसी तरह से दोहन जारी रहा तो सन् 2072 तक प्राकृतिक संसाधन में भारी कमी आ जायेगी जिसके कारण भावी पीढी का विकास बुरी तरह प्रभावित होगा।

सामाजिक विकास के प्रमुख रुप से 03 आयाम है:

1. पर्यावरण विकास।
2. आर्थिक विकास।
3. सामाजिक न्याय एवं विकास।

सतत् विकास या संपोषणीय विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनो का उपयोग करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि भावी पीढ़ी की आवश्यकताओं में भी कटौती न हो। यही कारण है कि सतत् विकास अपने शाब्दिक अर्थ के अनुरुप निरन्तर चलता रहता है। सतत् विकास में यह भी ध्यान रखा जाता है कि सामाजिक, आर्थिक विकास के साथ–साथ हमारा पर्यावरण भी सुरक्षित रहे। पर्यावरण तथा विकास पर विश्व आयोग 1983 के अन्तर्गत वर्टलैण्ड कमीशन द्वारा जारी रिपोर्ट 1987 के अनुसारः

सतत् विकास का अर्थ वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं से समझौता किये विना पूरा करना, अतः सतत् विकास का अर्थ उस विकास से है जो निरन्तर चलता रहे।

अध्ययन के उद्देश्य

शोध अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैः

1. संपोषणीय विकास की व्याख्या करना।
2. भावी पीढ़ी के लिए संपोषणीय विकास की उपादेयता से अवगत कराना।
3. प्राकृतिक संतुलन बनाये रखने पर जोर देना।
4. पर्यावरणीय खतरों एवं महामारियों के लिए उत्तरदायी कारणों की समीक्षा करना।
5. पर्यावरण के अनुकूल ऊर्जा के नये विकल्पों पर विचार करना।
6. संपोषणीय विकास हेतु क्रियानीति बनाना।

अध्ययन पद्धति

संपोषणीय विकास एवं प्राकृतिक आपदायें नामक विषय पर किये जाने वाले अध्ययन में अध्ययन उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए प्राथमिक एवं द्वितीयक संमंकों का प्रयोग किया जायेगा। द्वितीयक समंकों को प्राप्त करने हेतु पत्र/पत्रिकाओं, पुस्तकों एवं इण्टरनेट का सहारा लिया जायेगा।

जैसा कि हम सबको पता है कि सहस्राब्दि विकास लक्ष्य (Millennium Development Goals) 2015 में समाप्त हो गये थे इसलिये इन विकास लक्ष्यों के स्थान पर सतत् विकास लक्ष्यो (Sustainable Development Goals) को प्राप्त करने का फैसला संयुक्त राष्ट्र शिखर सम्मेलन में किया गया था। इस सम्बन्ध में इस महासभा की बैठक न्यूयार्क में 25 से 27 सितम्बर 2015 में आयोजित की गई थी। इसी बैठक में अगले 15 साल के लिये 17 लक्ष्य तय किये गये थे जिनको 2016 से 2030 की अवधि में हासिल करने का निर्णय लिया गया था। इस बैठक में 193 देशों ने भाग लिया था, इस संयुक्त राष्ट्र शिखर सम्मेलन की थीम Transforming our world the 2030 Agenda for sustainable development थी।

संयुक्त राष्ट्र एजेंडा 2030 के 17 विकास लक्ष्य

सतत् विकास लक्ष्य (एस0डी0जी0) के वैश्विक लक्ष्यों में गरीबी समाप्त करना, पर्यावरण की रक्षा आर्थिक असमानता को कम करना और सभी के लिए शांति और न्याय सुनिश्चित करना प्रमुख रुप से शामिल है।

1. गरीबी के सभी रुपों की पूरे विश्व से समाप्ति।
2. भूख की समाप्ति, खाद्य सुरक्षा, बेहतर पोषण एवं टिकाऊ कृषि को बढ़ावा।
3. सभी आयु के लोगो में स्वास्थ्य, सुरक्षा और स्वस्थ जीवन को बढ़ावा।
4. समावेशी और न्यायसंगत शिक्षा सुनिश्चित करने के साथ ही सभी को सीखने का अवसर देना।
5. लैंगिक समानता प्राप्त करने के साथ ही महिलाओं और लड़कियों को सशक्त करना।
6. सभी के लिये स्वच्छता और पानी के सतत् प्रबन्धन की उपलब्धता सुनिश्चित करना।

7. सस्ती, टिकाऊ और आधुनिक ऊर्जा तक पहुँच सुनिश्चित करना।
8. सभी के लिये निरन्तर समावेशी और सतत आर्थिक विकासपूर्ण और उत्पादक रोजगार तथा बेहतर कार्य को बढ़ावा देना।
9. लचीले बुनियादी ढ़ाँचे, समावेशी और सतत् औद्योगीकरण को बढ़ावा देना।
10. देशों के बीच और भीतर असमानता को कम करना।
11. सुरक्षित लचीले और टिकाऊ शहर और मानव बस्तियों का निर्माण।
12. स्थायी खपत और उत्पादन पैटर्न को सुनिश्चित करना।
13. जलवायु परिवर्तन और उसके प्रभावों से निपटने के लिये तत्काल कार्यवाही करना।
14. स्थायी सतत् विकास के लिये महासागरों, समुद्रो और समुद्री संसाधनों का संरक्षण और उपयोग।
15. सतत् उपयोग को बढ़ावा देने वाले स्थलीय और पारिस्थितिकीय, प्रणालियों सुरक्षित जंगलों, भूमि क्षरण और जैव विविधता के बढ़ते नुकसान को रोकने का प्रयास करना।
16. सतत् विकास के लिये शान्तिपूर्ण और समावेशी समितियों को बढ़ावा देने के साथ ही साथ सभी स्तरों पर इन्हें प्रभावी जबाबदेह पूर्ण बनाना ताकि सभी के लिये न्याय सुनिश्चित हो सकें।
17. सतत् विकास के लिये वैश्विक भागीदारी को पुनर्जीवित करने के अतिरिक्त कार्यान्वयन के साधनों को मजबूत बनाना।

आधुनिक मनुष्य के नैतिक पतन एवं लालची स्वभाव के चलते प्राकृतिक संसाधनों जैसेः जल, खनिज पदार्थ, जीवाश्म ईंधन, वन, मृदा आदि का अत्यन्त ही शोषण हुआ है, परिणामस्वरूप आज जल की समस्या, जीवाश्म ईधनों के घटते भण्डार, मृदा की उपजाऊ क्षमता का ह्रास, वैश्विक तपन, जैव विविधता का क्षरण आदि ने वैश्विक स्तर पर विकाराल समस्या का रूप धारण कर लिया है। जिससे निजात पाना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है और यह संपोषित विकास के द्वारा ही सम्भव है।

सामाजिक विकास के आयाम

संपोषणीय विकास और सामाजिक विकास एक–दूसरे के पूरक है, अर्थात् एक ही सिक्के के दो पहलू है। सामाजिक विकास मनुष्य के जीवन स्तर में वृद्धि से सम्बन्धित है अर्थात् यह मानव जीवन का निर्माण करने वाले सभी पहलुओं से सम्बन्धित है अर्थात यह मानव जीवन का निर्माण करने वाले सभी पहलुओं से सम्बन्धित हैं। वर्तमान समय में समाजशास्त्री सामाजिक विकास के आयामों में निम्नलिखित बातों को सम्मिलित करते हैंः

1. आम जनता की रोटी, कपड़ा और मकान जैसी मौलिक आवश्यकताओं की समुचित पूर्ति।
2. शारीरिक मानसिक स्वास्थ के उत्तम स्तर को बनाये रखने के लिए आवश्यक पोषक आहार, प्रदूषण रहित वातावरण, चिकित्सा आदि की पर्याप्त सुविधायें।
3. रोजगार के पर्याप्त अवसर तथा रहन–सहन का ऊँचा स्तर योग्यता व कार्यकुशलता के आधार पर न कि जाति, प्रजाति, धर्म या सम्प्रदाय के आधार पर।
4. शिक्षा का समुचित विस्तार जिसके अन्तर्गत वैज्ञानिक शिक्षा पेशेवर व नैतिक शिक्षा का समावेश हो ताकि समाज में सृजनात्मक क्षमता का विकास, शोध, अविष्कार, आदि संभव हो सके।
5. बिजली परिशुद्ध पानी, परिवहन व संचार जैसी बुनियादी सुविधायें सबके लिए सुलभ होना।
6. समाज के पिछड़े व शोषित वर्गों, किसानों, महिलाओं, बच्चों, वृद्धों व विकलांगो के विकास के लिए आवश्यक सुविधायें उपलब्ध होना।
7. विभिन्न, आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक विषमताओं को दूर करना ताकि समाज में एकता लाते हुए सामाजिक बदलाव संभव हो सकें।

8. विदेशी निर्भरता कम करके राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनाने के संचेत प्रयत्न करना।
9. राष्ट्र के स्वाभिमान, अस्मिता व राष्ट्रीय पहचान को बनाये रखना।

सतत् विकास वर्तमान समय की सबसे अधिक प्रासंगिक अवधारणा है, वर्तमान की कोविड–19 वैश्विक महामारी कहीं न कहीं संपोषणीय अथवा सतत् विकास की अनदेखी का ही परिणाम है। आगे भी अगर इस तरह की महामारियों एवं प्राकृतिक आपदाओं से बचना है तो पूरे विश्व को संपोषणीय विकास को गंभीरता से लेना होगा।

आज ऐसे विकास की आवश्यकता है जो पर्यावरण हितैषी होने के साथ–साथ प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में मददगार साबित हो सकें।

क्रिया नीति

पर्यावरण पर क्रिया नीति

ऊर्जा के क्षेत्र में: सस्ती व टिकाऊ ऊर्जा प्रदान करना सरकार का प्रमुख लक्ष्य है, जिसके अन्तर्गत ऐसी ऊर्जा का निर्माण करना जिसमें प्राकृतिक संसाधनों का दोहन कम से कम हो, तथा पर्यावरण को भी कोई नुकसान न पहुँचे। जैसे–सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, सी0एन0जी, ज्वारीय ऊर्जा, भू–तापीय ऊर्जा, जल विद्युत, कूड़े–कचरे से सौर ऊर्जा निर्माण, जैव ऊर्जा सयंत्र आदि।

कृषि के क्षेत्र में: रासायनिक खादों के स्थान पर जैविक खादों का उपयोग, जैविक कीटनाशकों का उपयोग, कृषि कार्यो में सौर ऊर्जा का उपयोग, फसल बीमा योजना आदि।

वैश्विक तपनः वैश्विक तपन को कम करने हेतु ग्रीन हाउस गैसों का कम से कम उपयोग विशेषकर सी0एफ0सी0 का।

प्रदूषण नियंत्रण हेतु क्रिया नीति

इसके अन्तर्गत निम्न प्रयास किये जा रहे हैः

अ. प्रदूषण नियामक बोर्ड का गठन।
ब. सामाजिक जागरूकता को बढ़ावा देना।
स. जनसंख्या नियत्रंण को प्रोत्साहन देना।
द. बड़े पैमाने पर प्रतिवर्ष पौधरोपण करना।
क. जल प्रबंधन करना।
ख. कूड़े–कचरे से खाद बनाना एवं ऊर्जा उत्पन्न करना आदि।

मनुष्य जब तक प्रकृति से लेन–देन समान स्तर पर करता रहा, अर्थात् जितना वह प्रकृति से लेता था उतना ही अन्य रुप में लौटा देता था समस्या तब उत्पन्न नहीं हुई। जैसे ही मनुष्य लालची हो गया वह प्रकृति के स्त्रोतों को अपने मतलब से उपभोग व दुरुपयोग करने लगा तथा लौटाना भूल ही गया, तब प्राकृतिक असन्तुलन (पर्यावरण प्रदूषण) एक स्वाभाविक प्रक्रियाा हो गई है। जब तक स्वतः सुधारों ही संभावना रही प्राकृतिक आपदाओं का सामना कम ही हुआ है। जब असन्तुलन अपने चरम बिन्दु को भी पार करने को आया तो प्राकृतिक व अप्राकृतिक सभी विपदाओं ने मनुष्य से बदला लेने का सिलसिला शुरु कर दिया है।

सबसे पहले हम मनुष्य द्वारा की गई सभी गलतियों और करतूतों का हिसाब लगाते है जिनके कारण प्राकृतिक पर्यावरण अपनी वर्तमान बदहाली के कगार पर पहुँचाया गया है।

गरीबी उन्मूलनः गरीबी उन्मूलन के लिये केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार की योजनायें चलायी जा रही है। जैसेः अन्त्योदय योजना, अटल सामाजिक सुरक्षा योजना, मनरेगा, मेक इन इण्डिया, स्टार्ट अप, स्टैण्ड अप योजना आदि।

खाद्य सुरक्षाः राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा नीति 2013 खाद्य पोषण बनाने पर जोर, मध्यान्ह भोजन योजना, सस्ता एवं मुफ्त अनाज योजना आदि।

स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्यक्रमः आयुष्मान भारत योजना, एन0एच0एम0 2005, आयुष योजना, स्वास्थ्य बीमा योजना आदि।

समावेशी शिक्षाः सरकार द्वारा समावेशी शिक्षा पर विशेष जोर दिया जा रहा है इस हेतु समय–समय पर निम्न कार्यक्रम चलाये जा रहे है। समग्र शिक्षा अभियान, सर्व शिक्षा अभियान, आपॅरेशन ब्लैक बोर्ड, एकलव्य मॉडल विद्यालय एवं नई शिक्षा नीति 2020 आदि ।

लैंगिक समानताः सरकार द्वारा लैंगिक समानता हेतु विशेष प्रयास किये जा रहे जैसेः बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना, सुकन्या योजना, स्वयं सहायता समूह, तीन तलाक कानून आदि।

सतत् विकास के समक्ष चुनौतियां

1. संकेतको को परिभाषित करना।
2. वित्त की कमी।
3. सरकुलर इकोनोमी का अभाव।
4. निगरानी का अभाव।
5. प्रगति मापन में कमी।
6. बढ़ती आर्थिक प्रतिस्पर्द्धा।
7. स्वार्थ से परिपूर्ण जीवन।
8. बढ़ती जनसंख्या घटते संसाधन।
9. पर्याप्त पर्यावरण सचेतना का अभाव।
10. सामाजिक न्याय में कमी।
11. गरीबी–अमीरी के बीच बढ़ती खाई।

सुझाव

1. बढती जनसंख्या पर नियंत्रण।
2. शिक्षा प्रणाली में सुधार करते हुये पाठ्यक्रम में सतत् विकास को अनिवार्य रूप से शामिल किया जाये।
3. पर्यावरण के प्रति जागरूकता अभियान चलाया जाये।
4. नैतिक चरित्र को बढ़ावा।
5. समावेशी विकास में प्रगति लायी जाये।
6. इकोफ्रेन्डली उद्योगों को बढ़ावा दिया जाये।
7. सामाजिक न्याय को बढ़ावा।
8. गरीबी अमीरी के बीच खाई को पाटने के प्रयास किये जाये।
9. उपभोक्तावादी संस्कृति पर नियत्रंण किया जाये।
10. शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य हेतु ध्यान एवं योग को बढ़ावा दिया जाये।
11. सर्कुलर इकोनोमी में तेजी लायी जाये।

आप किसी भी धर्म अथवा संस्कृति के मानने वाले हो सकते है, लेकिन पीने को शुद्ध जल, सांस लेने को शुद्ध प्राण वायु, खाने को अन्न, रहने को मकान और पहनने को वस्त्र आपको भी चाहिए ही। अगर सभ्यता की अंधी दौड़

में हम विकास के नाम पर विनाश का ताण्डव करेंगें, तब भविष्य अंधकारमय होगा ही।

निष्कर्ष

मानव प्रकृति की अनमोल धरोहर है, मानव के अस्तित्व को बचाने के लिये भावी पीढ़ी को सुरक्षित करना होगा जिसके लिये सतत् विकास की महति आवश्यकता है। वर्तमान समय में बढ़ता पर्यावरण प्रदूषण घटते प्राकृतिक संसाधन आज वैश्विक स्तर पर गम्भीर चिन्ता का विषय है। अतः आज इस गम्भीर समस्या से निजात पाने के लिये सतत् विकास (संपोषित) को अपनाना आज के समय की सबसे बड़ी आवश्कता है ताकि हम आने वाली पीढ़ियों के लिये पर्याप्त प्राकृतिक संसाधनों के साथ–साथ उन्हें स्वच्छ एवं प्रदूषण रहित वातावरण भी प्रदान कर सकें। इसकी अवहेलना करना कालीदास की कहावत को चरित्रार्थ करना होगा कि वह जिस डाली पर बैठे थे उसी डाली को काट रहे थे। कोविड–19 वैश्विक महामारी हमारे लिये एक गम्भीर चेतावनी है अब हमें इस बात को अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि सतत् विकास में ही मानव कल्याण निहित है।

सन्दर्भ सूची

1. https://www.drishtiias.com
2. https://www.scientificword.in
3. मदन जी0आर0, *परिवर्तन एवं विकास का समाजशास्त्र,* विवेक प्रकाशन जवाहर नगर, दिल्ली–7,पृ0–162।
4. https://www.jagranjosh.com
5. मदन जी0आर0, *परिवर्तन एवं विकास का समाजशास्त्र,* विवेक प्रकाशन जवाहर नगर, नई दिल्ली–7 पृ0 157 से 158।
6. गोयल अश्विनी कुमार, *पर्यावरण संरक्षणः जनसंख्या प्रबन्धन एवं सतत् विकास,* साहित्य संस्थान, ई–10/660, उत्तरांचल कालोनी (निकट संगम हाल) लोनी, गाजियाबाद (उ0प्र0) पृ0 सं0 112–113।

––==00==––